ISSN 2249-1635

अप्रैल-मई-जून 2012 त्रैमासिक लोक-यज्ञ

कुछ तुम कहो कुछ हम कहें.....!

(पत्र/पत्रिका एवं पुस्तक समीक्षा का स्थायी स्तंभ)

आत्मा को प्रकाशित करनेवाली कृति-''काशी मरणान्मुक्ति'' उपन्यास

*** उपन्यासकार : मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड**

*** प्रकाशक :** शिव ॐ साई प्रकाशन, 95/3, वल्लभनगर, इन्दौर-452003 (मध्यप्रदेश), **मूल्य :** 360 रूपये

''काशी मरणान्मुक्ति'' इन्दौर निवासी मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ लेखक द्वय का लोकप्रिय सामाजिक धार्मिक उपन्यास है। 510 पृष्ठ और 69 अध्यायों में विभाजित यह उपन्यास आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य का महाकाव्यात्मक उपन्यास माना जाना चाहिए। क्योंकि मात्र दो सालों में इस उपन्यास की तीन आवृत्तीयां प्रकाशित हो गयी है। ''काशी मरणामुक्ति'' एक आलौकिक गुरू प्रसाद है और लेखक द्वय और प्रकाशक मात्र एक माध्यम है। प्रकाशक भाई योगेन्द्र पाटीदार के माध्यम से काशी का अमृत मय प्रसाद मुझे ग्रहण करने को मिला। इसलिए मैं प्रकाशक महोदय का आभारी हूँ।

शिव की पावन नगरी ''काशी'' पर आजतक कई उपन्यास और कहानियाँ लिखी गयी है। मगर ''काशी मरणामुक्ति'' काशी पर लिखा एक प्रामाणिक अध्यात्मिक आलौकिक उपन्यास कहा जा सकता है। जीवन का अर्थ है - शरीरधारी में, मानव में, प्राणों का अस्तित्व, उसके जन्म से मृत्यु तक का काल। जीवन गतिशील है, वह एक यात्रा है, जिसका आरम्भ जन्म है और मंजिल मृत्यु उस मंजिल, जीवन के अन्तिम क्षण-मृत्यु-को सुखद शान्तिमय, निश्चित, अच्छा बनाने के लिए मनुष्य जीना होगा-अच्छी तरह जीना होगा। अतः जीवन की गति जीने, अच्छी तरह जीने में हैं। इस जीवन-गति में अनेक बाधाएं है, समस्याएं हैं। यह गति निर्बाध क्योंकर हो। विश्व में मनुष्य एक नहीं अनेक है। एक और अनेक की पारस्परिक टकराहट, गतिरोध से यह उलझन उठ खडी हुयी। अहम का पुतला मनुष्य अज्ञानवश, प्रायः अवशिष्ट बरसाती जल की स्वार्थ के गड्ढो-पोखरो में केन्द्रित हो सड़ता-सूखता है। मगर ''काशी मरणामुक्ति'' का नायक 'महा' (महाभृणन्नम) नामक चाण्डाल नर से नारायण बनकर समाज को जीव-शिव एकता का संदेश देता है। भूमिका में लेखक द्वय ने ठीक ही कहा है कि ''कहानी एक ही है और नायक भी एक। किन्तु एक ही नायक के ये दो रूप-एक जगत में ख्यात तो दूसरा अनजाना अज्ञात। एक फूलों से उठती सुगंध, तो दूसरा चिता में जलते मुर्दों से उठती दुर्गंध। एक सूर्य से उजला दिन तो दूसरा चंद्रविहीन अमावस्या की अंधेरी रात। एक विवाह के मंडप में सजी दुल्हन की चुनरी का रचियता, तो दूसरा जीर्ण-शीर्ण मल-मूत्र से भरी मृत काया का दाहकर्ता एक श्री विष्णुरूप रामानंद का का शिष्य तो दूसरा शिवरूप गुरू का चेला। ''काशी मरणान्मुक्ति'' उपन्यास दलित, चांडाल महा की जीवन गाथा है जो सद्गुरू की खोज करते हुए अध्यात्म के शिखर को छुकर पशु से पशुपति, जीव से शीव, नर से नारायण और एक दलित से परम योगी बन जाता है। इस उपन्यास की सम्पूर्ण कथा वेद एवं पुराणों को कथा रूप में इस प्रकार प्रस्तुती करती है कि हमें हमारे वेद और पुराण कालातीत से वर्तमान तक जीवित होने की सार्थकता बता जाते हैं। उपन्यास की कथा का सम्पूर्ण ताना बाना महा और उसके गुरू को लेकर बुना गया है। ''शिव-पुराण और अन्य पुराणों का आधार बनाकर लिखा गया यह उपन्यास एक दलित चांडाल के मोक्ष की यात्रा है। इस यात्रा में कबीर, तुलसी, बुद्ध और साक्षात भगवान शिव उसकी मदत करते हैं। इस आलौकिक पावन, मंगल मोक्ष के पथ से गुजरना सचमुच में एक अद्भूत रहस्यमय अनुभूती है।

''काशी मरणान्मुक्ति'' जैसे कि मैनें उपर कहा है कि औघड नगरी काशी का सचित्र वृतांत तो है ही साथ में गंगा और उसके सभी घाटों की क्रमवार व्याख्या है। आदि से अन्ततक उपन्यास काशी, गंगा और उसके घाटों की रहस्यमयी अनुभूति करातें हैं। उपन्यासों में पात्रों की संख्या कम है मगर उनका बेहद बखूबी से चित्रण उपन्यास कार ने किया है। इस्माइल चाचा, भुतू चाचा जैसे पात्र मन पर विशेष प्रभाव छोडते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से पाठक सभी तिर्थस्थलों की यात्रा महा और बुद्धेश के साथ करतें है साथ में चारधाम और बारा ज्योर्तिलिंगों की विस्तृत जानकारी भी पाते हैं ओर शिव के विभिन्न रूपों से भी परिचित होत है।

उपन्यास की भाषा शुद्ध हिन्दी और अलंकारयुक्त है। कठिन विषय होते हुए भी परिष्कृत हिन्दी में लेखकों ने अपना कमला दिखाया हैं। अध्यात्म-दर्शन का विषय होने पर भी पाठक उपन्यास पढ़ते समय एक अलग ही दुनिया में विचरन करते हैं। सम्पूर्ण उपन्यास पठनीयता के साथ ही बेहद रोचक और अद्भूत हैं। इस उपन्यास को एपीजे अब्दुल कलाम साहब से लेकर दलाई लामा तक और उस्ताद बिस्मिल्ला खान साहब से लेकर अजय देवगण तक सभी लोगों का आशीर्वाद और सहयोग मिला है। अनेक सन्त-महन्त, साधु-संन्यासियों ने भी इस उपन्यास को पढ़ा और सराहा है।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि मैं इस उपन्यास से इतना प्रभावित हो गया कि मैंने तुरन्त इसे मराठी भाषा में अनुवाद करने का निर्णय किया। लेखक प्रकाशक से अनुमति भी मिली है।

कुल मिलाकर यहीं कह सकता हूँ कि सौ पुस्तकें पढ़ने से अच्छा है एक आत्मा को प्रकाशित करनेवाली पुस्तक पढ़ना। आशा है इस उपन्यास का हिन्दी साहित्य में जोरदार स्वागत होगा।

*** संपर्क ***

शिव ॐसाई प्रकाशन,

23-24, धेनु मार्केट, श्री कृष्ण चेंबर्स

इन्दौर-452003 (मध्यप्रदेश)

*** समीक्षक ***

डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत'

संपादक, लोकयज्ञ पत्रिका, बीड